OM -21- 2018 DELHI FINAL_Page 1 and 2 1/9/2019 9:28 AM Page 9

कथा सरिता

सच्चा प्रेम

भारत के उत्तर पश्चिम में स्थित राजस्थान के इतिहास से जुड़ी, मीरा की कहानी बहुत प्रचलित है। उनकी कहानी कृष्ण के साथ अटूट प्यार को दर्शाती है। मीरा, एक राजा की सबसे छोटी पुत्री थी। उनकी सभी बहनों का विवाह हो चुका था। आठ वर्ष की उम्र में एक दिन जब वह बारात देखने गई तो उसने अपनी माँ से प्रश्न पूछा कि मेरा दूल्हा कौन होगा? माता ने उसे कृष्ण की एक मूर्ति दी और कहा, यह तुम्हारा दूल्हा है। माता को क्या पता था कि हँसीकुडी में कही गई बात के अनुसार मीरा कृष्ण को ही अपना पति मान लेगी। मीरा ने प्यार से उस मूर्ति को उठाया और अपने कमरे में चली गई। उसके बाद वह दिन-रात कृष्ण की उपासना करने लगी।

कुछ समय के बाद उनके माता-पिता ने उनका एक राज घराने में विवाह कर दिया। श्रीकृष्ण से अटूट प्यार के विषय में उन्होंने अपने पति को बता दिया और कहा आप मेरे पति नहीं हो। हो सकता है मेरे माता-पिता ने मेरे लिए आपका चयन किया है परन्तु मेरा तो कृष्ण संग पहले ही विवाह हो चुका है। उनके पति, उनकी असीम भक्ति को समझ उनसे प्यार करते रहे। वह विवाह के बाद भी महल में साधारण रूप में रहती और उन्हें चारों ओर कृष्ण ही कृष्ण दिखाई देते। वह श्रीकृष्ण की याद में कार्य करती, निरंतर भजन गाती रहती। उनके घर वाले जिन्हें परम्पराओं की परवाह थी, अपनी इच्छाओं हेतु मीरा पर अत्याचार करने लगे। जब वे कामयाब नहीं हो सके तो उन्हें ज़हर का प्याला भेज दिया गया। मीरा जानती थी कि यह प्याला ज़हर का है, फिर भी पी लिया। लेकिन वह कृष्ण से इतना प्रेम करती थी कि वह ज़हर का प्याला भी अमृत में बदल गया। एक दिन जब मीरा श्रीकृष्ण की स्मृति में घूम रही थी तो अचानक कृष्ण प्रकट हुए और उन्हें अपने साथ ले गये। आत्मा शरीर छोड़कर चली गई।

मान्यता है कि इस कहानी में दुःख की व प्राप्ति की खुशियां हैं। मीरा के गाये हुए भगवान के प्रति प्रेम के गीत आज भी भारत में सभी प्यार से सुनते हैं।

उनका प्रेम सम्पूर्ण व दुनियावी चीज़ों से ऊपर था। वह भगवान पर बलि चढ़ गईं। भगवान से असीम प्रेम की अनूठी गाथा गाती ये कहानी हमें भी उस परम सुख की तरफ समर्पणता के साथ ले जाने वाली है। इसलिए समर्पण भाव से परमात्मा से प्रम ही उसको प्राप्त करा सकता है।

देने की आदत डालें

एक भिखारी सुबह-सुबह भीख मांगने निकला। चलते समय उसने अपनी झोली में जौ के मुट्ठी भर दाने डाल दिए, इस अंधविश्वास के कारण कि भिक्षाटन के लिए निकलते समय भिखारी अपनी झोली खाली नहीं रखते। थैली देखकर दूसरों को भी लगता है कि इसे पहले से ही किसी ने कुछ दे रखा है।

पूर्णिमा का दिन था। भिखारी सोच रहा था कि आज अगर ईश्वर की कृपा होगी तो मेरी यह झोली शाम से पहले ही भर जाएगी। अचानक सामने से राजपथ पर उसी देश के राजा की सवारी आती हुई दिखाई दी। भिखारी खुश हो गया। उसने सोचा कि राजा के दर्शन और उनसे मिलने वाले दान से आज तो उसकी सारी दरिद्रता दूर हो जाएगी और उसका जीवन संवर जायेगा। जैसे-जैसे राजा की सवारी निकट आती गई, भिखारी की कल्पना और उत्तेजना भी बढ़ती गई।

जैसे ही राजा का रथ भिखारी के निकट आया, राजा ने अपना रथ रुकवाया और उतर कर उसके निकट पहुंचे। भिखारी की तो मानो सांसें ही रुकने लगीं, लेकिन राजा ने उसे कुछ देने के बदले उल्टे अपनी बहुमूल्य चादर उसके सामने फैला दी और उससे भीख की याचना करने लगा। भिखारी को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। अभी वह सोच ही रहा था कि राजा ने पुनः याचना की। भिखारी ने अपनी झोली में हाथ डाला, मगर हमेशा दूसरों से लेने वाला मन देने को राज़ी नहीं हो रहा था।

जैसे-तैसे करके उसने दो दाने जौ के निकाले और राजा की चादर में डाल दिए। उस दिन हालांकि भिखारी को अधिक भीख मिली, लेकिन अपनी झोली में से दो दाने जौ के देने का मलाल उसे सारा दिन रहा। शाम को जब उसने अपनी झोली पलटी तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। जो जौ वह अपने साथ झोली में ले गया था उसके दो दाने सोने के हो गए थे। अब उसे समझ में आया कि यह दान की महिमा के कारण ही हुआ। वह पछताया के काश! उस समय उसने राजा को और अधिक जौ दिए होते। लेकिन दे नहीं सका, क्योंकि उसकी देने की आदत जो नहीं थी।

खुशी बांटने का तरीका ढूंढ़ें

एक आदमी ने दुकानदार से पूछा, केले और सेब क्या भाव है? केले 20 रुपये दर्जन और सेब 100 रुपये किलो। उसी समय एक गरीब सी औरत दुकान में आयी और बोली मुझे एक किलो सेब और एक दर्जन केले चाहिए। क्या भाव है भैया?

दुकानदार - केले 5 रुपये दर्जन और सेब 25 रुपये किलो। औरत ने कहा जल्दी से दे दीजिए। दुकान में पहले से मौजूद ग्राहक ने खा जाने वाली निगाहों से घूरकर दुकानदार को देखा। इससे पहले कि वो कुछ कहता, दुकानदार ने ग्राहक को इशारा करते हुए थोड़ा सा इंतज़ार करने को कहा। औरत खुशी-खुशी खरीदारी करके दुकान से निकलते हुए बड़बड़ाई, हे भगवान तेरा लाख-लाख शुक्र है, मेरे बच्चे फलों को खाकर बहुत खुश होंगे। औरत के जाने के बाद दुकानदार ने पहले से मौजूद ग्राहक की तरफ देखते हुए कहा, ईश्वर गवाह है भाई साहब! मैंने आपको कोई धोखा देने की कोशिश नहीं की। यह महिला विधवा है। इसके चार बच्चे हैं। ये किसी से भी किसी तरह की मदद लेने को तैयार नहीं है। मैंने कई बार कोशिश की है और हर बार नाकामी मिली है। तब मुझे यही तरकीब सूझी है कि जब कभी ये आए तो मैं उसे कम से कम दाम लगाकर चीज़ें दे दूँ। मैं यह चाहता हूँ कि उसका भम्र बना रहे और उसे लगे कि वह किसी की मोहताज नहीं है। मैं इस तरह भगवान के बन्दों की पूजा कर लेता हूँ। थोड़ा रुककर दुकानदार बोला, यह औरत हफ्ते में एक बार आती है। जिस दिन यह आती है, उस दिन मेरी बिक्री बढ़ जाती है और उस दिन परमात्मा मुझपर मेहरबान हो जाता है। ग्राहक की आँखों में आँसू आ गए और आगे बढ़कर दुकानदार को गले लगा लिया और बिना किसी शिकायत के अपना सौदा खरीदकर खुशी-खुशी चला गया। खुशी बांटना चाहो, तो तरीका भी मिल जाता है।

पुखरायां-उ.प्र.। नव वर्ष के अवसर पर आयोजित 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम में उपस्थित हैं उपजिलाधिकारी राजीव रंजन, तहसीलदार, विधायक पुखरायां, समाजसेवी मधुसूदन गोयल, ब्र.कु. ममता तथा अन्य।

डाकपत्थर-सेलाकुई (उत्तराखण्ड)। 'व्यक्तिगत जीवन में सम्बन्धों की मधुरता' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए विधायक सहदेव पुण्डरी, प्रधान रीता शर्मा, ब्र.कु. सविता तथा ब्र.कु. आरती।

जालोर-राज.। जालोर के नवनिर्वाचित विधायक जोगेश्वर गर्ग तथा आहोर के नवनिर्वाचित विधायक छगन राजपुरोहित के लिए आयोजित सम्मान समारोह में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रंजू।

वैरिया-उ.प्र.। आध्यात्मिक प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए उप जिलाधिकारी लाल बाबू दूबे, ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. कमलाकर तथा अन्य।

मण्डी-गोबिन्द गढ़। ''सात अरब सत्कर्मों की महायोजना'' कार्यक्रम के पश्चात् आर्य समाज मन्दिर के प्रधान,गोबिन्द गढ़ पब्लिक कॉलेज और स्कूल के ट्रस्टी नंदकुमार खन्ना को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. साक्षी व ब्र.कु. राम प्रकाश सिंघल,न्यूयॉर्क।

सुन्दर नगर-हि.प्र.। '7 अरब सत्कर्मों का महाअभियान' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. राम प्रकाश सिंगला के साथ पत्रकार बंधू तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

जमशेदपुर-झारखण्ड। 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत' अभियान की रैली पहुंचने पर बी.एड. कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. संजू, प्रिंसीपल ज्योति बहन तथा अन्य।

बहल-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा झुग्गी झोपड़ियों में आयोजित 'व्यसनमुक्ति कार्यक्रम' में गुटके का व्यसन दान करती महिला। उपस्थित हैं ब्र.कु. अशोक, ब्र.कु. शकुंतला, ब्र.कु. पूनम तथा ब्र.कु. प्रमोद।